गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

बच्चे की भाषा उसकी पूँजी है; उसकी कमजोरी नहीं ।

राजपाल

सत्र : 2024-25

दिसम्बर, 2025

हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 12 दिसम्बर 2025
मार्गशीर्ष | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
डॉ. वीरेंद्र
डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया
रिनू
राहुल, प्रियंका
संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

परिचय
बालकृष्ण शर्मा नवीन- एक परिचय

साहित्य – मंथन

विविध
साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
प्रशासनिक शब्दावली
क्रिसमस की खुशी बनाम गुरु गोबिंद सिंह के बलिदान
पुस्तक समीक्षा

संदेश

इस वर्ष का समापन और नववर्ष का आगमन कुछ विशेष दिवसों के साथ हो रहा है, जो हमें विविध मूल्यों का समन्वित संदेश देते हैं। ये केवल कैलेंडर के चिह्न नहीं, बल्कि हमारे सामूहिक जीवन के महत्वपूर्ण आयामों के प्रतीक हैं।
वीर बाल दिवस हमें साहस, बलिदान और दृढ़ संकल्प की याद दिलाता है। साहिबजादों की वीरता सिर्फ इतिहास का पन्ना नहीं, बल्कि हमारे अंदर के संघर्षण और नैतिक साहस को जगाने की प्रेरणा है। एक छात्र के रूप में, अपने सिद्धांतों पर अडिग रहना, चुनौतियों का डटकर सामना करना ही आज के संदर्भ में वीरता है। क्रिसमस प्रेम, शांति, दया और 'देने की भावना' का पर्व है। यह हमें आत्मकेंद्रितता से बाहर निकलकर समुदाय के प्रति, विशेषकर कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशील बनने का आह्वान करता है। कॉलेज परिवार के सदस्य के रूप में, हमारा कर्तव्य है कि हम परस्पर सहयोग, सौहार्द और उदारता का वातावरण बनाए रखें।किसान दिवस हमारी मूलभूत आवश्यकताओं के स्रोत, हमारे अन्नदाताओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है। यह दिवस हमें मेहनत, धैर्य और प्रकृति के साथ सामंजस्य के महत्व से परिचित कराता है। एक शिक्षित नागरिक होने के नाते, हमारा दायित्व है कि हम खाद्य सुरक्षा, जल संरक्षण और टिकाऊ विकास जैसे विषयों पर गंभीर चिंतन करें।राष्ट्रीय गणित दिवस महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन को समर्पित है। यह दिवस तर्क, विश्लेषण, समस्या-समाधान और वैज्ञानिक चिंतन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दोहराता है। गणित केवल संख्याओं का विषय नहीं, बल्कि जीवन में सटीकता, अनुशासन और तार्किक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने का माध्यम है।इन चारों दिवसों का सामूहिक संदेश हमारे समग्र विकास की ओर इंगित करता है – वीरता से चरित्र, करुणा से मानवता, किसान से जुड़ाव से सामाजिक दायित्वबोध और गणित से वैज्ञानिक दृष्टिकोण। एक आदर्श शिक्षा का उद्देश्य भी यही है: संतुलित और संवेदनशील नागरिक तैयार करना।
इस पत्रिका के माध्यम से, मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि इन मूल्यों को केवल उत्सव तक सीमित न रखें, बल्कि अपने दैनिक जीवन, अध्ययन और सामाजिक संवाद का हिस्सा बनाएं। आइए, हम सभी नए वर्ष में ज्ञान, सेवा और सद्भावना के पथ पर साथ-साथ चलने का संकल्प लें। आप सभी को इन शुभ दिवसों की व नववर्ष की अग्रिम अनंत हार्दिक शुभकामनाएं।

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

एक साथ मनाएं, एक साथ सीखें

दिसंबर माह का यह सप्ताह हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक और मूल्यपरक जीवन के चार महत्वपूर्ण पहलुओं की याद दिलाता हुआ चार विशेष दिवस लेकर आया है। ये दिवस केवल कैलेंडर पर चिह्नित तिथियाँ नहीं हैं, बल्कि ये हमारे छात्र जीवन एवं शिक्षा के उद्देश्य को गहराई से समझने के सूत्र हैं।
26 दिसंबर: वीर बाल दिवस हमारे समक्ष चरित्र बल एवं साहस का आदर्श प्रस्तुत करता है। यह दिवस हमें यह सीख देता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री अर्जित करना नहीं, बल्कि ऐसा दृढ़ चरित्र निर्माण करना है जो अधिकारों के प्रति सजग हो और कर्तव्यों के प्रति अडिग। एक छात्र का सबसे बड़ा साहस सत्य का साथ देना और अन्याय के विरोध में खड़े होने का सामर्थ्य विकसित करना है।
25दिसंबर: क्रिसमस सहिष्णुता, प्रेम और सेवा का संदेशवाहक है। एक बहुलतावादी समाज में रहते हुए, यह पर्व हमें विविधताओं का सम्मान करना और 'दूसरे' के प्रति संवेदनशील बनना सिखाता है। कॉलेज परिसर एक लघु समाज है, जहाँ इन मानवीय मूल्यों का अभ्यास ही हमें बेहतर नागरिक बनाता है।
23दिसंबर: किसान दिवस हमें परिश्रम, धैर्य और प्रकृति के साथ सामंजस्य का पाठ पढ़ाता है। यह हमारे मूल को याद दिलाता है। शिक्षित होने का अर्थ है अपनी जड़ों से जुड़ाव। हमें अपने अध्ययन में ऐसी खोज और नवाचार पर बल देना चाहिए जो हमारे किसानों के जीवन को सरल और समृद्ध बना सके।
22 दिसंबर: राष्ट्रीय गणित दिवस तार्किक चिंतन, सटीकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के महत्व को रेखांकित करता है। गणित हमें निर्णय लेने की क्षमता देती है। यह केवल विषय नहीं, बल्कि जीवन को व्यवस्थित ढंग से जीने की कला है। रामानुजन का जीवन हमें सिखाता है कि जुनून और लगन किस प्रकार महान आविष्कार का मार्ग प्रशस्त करते हैं।
चारों दिवस मिलकर एक संपूर्ण शिक्षा का खाका प्रस्तुत करते हैं। वीर बाल दिवस हमें 'चरित्र', क्रिसमस 'मानवता', किसान दिवस 'जिम्मेदारी' और गणित दिवस 'विवेक' का पाठ पढ़ाता है। एक आदर्श छात्र का व्यक्तित्व इन चारों स्तंभों पर ही टिका होना चाहिए।
हमारी कॉलेज पत्रिका का यह अंक इन्हीं मूल्यों को आत्मसात् करने का एक प्रयास है। आइए, हम न केवल इन दिवसों को मनाएँ, बल्कि इनसे प्राप्त प्रेरणा को अपने अकादमिक और व्यक्तिगत जीवन का अंग बनाएँ। क्योंकि सच्ची शिक्षा वही है जो हमें एक संवेदनशील मानव, एक जिम्मेदार नागरिक और एक तार्किक विचारक बनाए।

संपादक

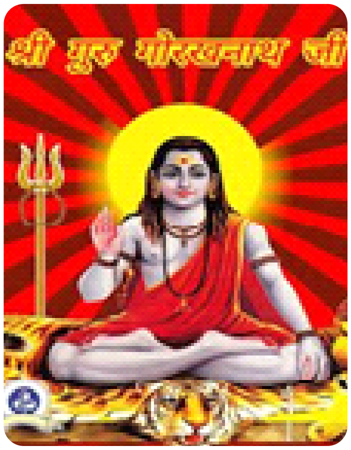

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

श्रभैमात्रा जोग :- यह एक सूत्रबद्ध रचना है इसके प्रारंभ में 'ऊं अकल पंथ, अकलि का मारग, सत भोगी, सहज आसन प्रांण, जोगी, पवन गुटिका' द्वारा नाथ योगी का आभ्यन्तर प्रतीक दिखाया गया है। इसमें यम, नियम का रूपकात्मक वर्णन मिलता है तथा नाथ योगी की वेश-भूषा का भी परिचय दिया गया है।"
पन्द्रह तिथि :- पन्द्रह तिथि में तिथ्यानुसार योग साधना वर्णित है, साथ ही भाडंबर पूर्ण साधनों का खण्डन भी है। बाह्य-अंतर का एकाकार, नाड़ी मिलन, चित्त स्थिरता, पंचतत्व की सिद्धि, षटचक्र विकार, आदि का वर्णन किया गया है ।"

६. सप्तवार :- सप्तवार में सातों दिनों का कार्यक्रम है। पवन दृढ़ करना, शून्य को धारण करना, अम्बर भरना, माया बांधना, चन्द्र सूर्य सम करना, शिवशक्ति मिलन, इन्द्रिय निग्रह, शरीर शोधन इत्यादि दिनों के अनुसार बताए गये हैं।

१०. मछीन्द्र गोरख बोध :- यह अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है। इसमें गुरु शिष्य
संवाद है । इस रचना में गोरखनाथ के अनेक प्रश्नों का समाधान मत्स्येन्द्र द्वारा प्रस्तुत किया गया है। विषय सबदी के ही हैं जो १२७ छंदों में प्रस्तुत किये गये हैं। अवधूत कहाँ रहे, क्या-क्या करे, क्या खाये, सहज, संयम, पवन, प्राण, वाणी, समाधि, उपाधि, कंध आदि नाथ-सम्प्रदाय में प्रयुक्त प्रत्येक वस्तु का उल्लेख है।" इस का सारांश गोरखनाथ के शब्दों में इस प्रकार है :-
'ए षट चक्र का जाणें भेव, सो आपैं करता आपैं देव । मन पवन साथै ते जोगी, जुरा पलटै काया होई निरोगी ।"
इस रचना को नाथ सम्प्रदाय का संक्षिप्त शब्दकोष भी कहते हैं।

११ रोमावली :- रोमावली में शरीर रचना के तत्त्वों का विचार कर मुद्रा, बंध, वेष, पीर, मन, पवन, इन्द्रिय श्रादि का विवधरूपात्मक एवं योगपरक वर्णन है । इसमें भी 'कोण-कोण' करके प्रश्न पूछे गये हैं जिनका वर्णनों द्वारा समाधान प्रस्तुत किया गया है। रचना के अन्त में शिष्य पूछता है-
सोलह कला चन्द्रमा की ताकै गुण भींतरि राषे ते कोण कोंण ।
गुरु बताते हैं :
सांति, नुवर्त, क्षिमां, नूमल, निहचल, ग्यांन, सरूप, पद, नूबांण, नृविष, निरंजन, अहार, निद्रा, मैथुन, बाई, अमृत ये सोलह कला चद्रमा की बोलिये ।
रोमावली हिन्दी की प्रथम छन्द मुक्त काव्य रचना कही जा सकती है।

१२. ग्यान तिलक :- इसमें 'शब्द' की महिमा गाई गई है। अलख पुरुष में समा जाना योग-साधक के लिए अत्यन्त आवश्यक माना गया है। सतगुरु, आपासुरति, आशा, तृष्णा, नाथ, शून्य प्राप्ति आदि की व्याख्या की गई है।" आध्यात्मिक आनन्द की प्राप्ति के विषय में कहा गया है कि आध्यात्मिक आनन्द तो ऐसे मिलता है जैसे -

अंजन माहि निरंजन मेट्या, तिल मुष मेट्या तेलं ।

मूरति माहि अमृत रति परस्या, भया निरंतरि षेलं ।।"

ग्यान तिलक की वर्णन शैली में काव्यात्मकता अधिक है ।

१३. पंचमात्रा :- पंचमात्रा में पंचतत्वों पर आध्यात्मयोगात्मक विचार किया गया है, इसमें चिसचक्र और मूलचक्र का उल्लेख तो अवश्य किया गया है, किन्तु उसे विस्तार नहीं दिया गया। इस रचना में आन्तरिक सुधार पर बल दिया गया है तथा बाहरी दिखावे का विरोध किया गया है।" इनका कथन है -
पांचू इन्द्री पूरै स्वाद, ते श्रवधू बजावै सींगी नाद।"
तथा
ये पंच मात्रा जोगी बूझै, ताकू त्रिभुवन सू सकल देवता पूजै।।"

१४- गोरख उपनिषद - इस रचना को हिन्दी की प्रथम गद्य रचना कह

सकते हैं। इसका वर्णन डॉ० हषारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० रांगेय राघव तथा डॉ० बड़थ्वाल ने भी नहीं किया है। यह रचना सर्वप्रथम डॉ० कल्याणी मल्लिक द्वारा संपादित 'सिद्ध सिद्धान्त पद्धति एण्ड अदर वर्क्स आँव नाथ योगीज' में संकलित की गई है। उन्हें इसकी हस्तलिखित प्रति जोधपुर से प्राप्त हुई थी। इसकी भाषा हिन्दुस्तानी और राजस्थानी का मिश्रण है। यह रचना नाथ सिद्धों में अत्यधिक प्रचलित है। इसके प्रारंभ में श्रीनाथ स्तुति है
'श्रीनाथ परमानन्द है विश्वगुरू है निरंजन है विश्व व्यापक है। महासिद्धन के लक्ष्य है तिन प्रति हमारे आदेश होहु।।"

इसमें गोरक्ष शब्द का अर्थ बताते हुए कहा है- 'गो' कहिये वाक्शब्द ब्रह्म ताकी 'र' कहिये रक्षा करे 'क्ष' कहिये क्षय करि रहित अक्षय ब्रह्म ऐसे श्रीगोरक्षनाथ गोरख उपनिषद में अनिर्वचनीय पदार्थ से महाभूत और महाभूत से ईश्वर और जीव की व्युत्पत्ति की व्याख्या की गई है। गुरू और शिष्य की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। योग के श्राठों अंगों तथा अवधूत की व्याख्या की गई है।

गुरु गोरखनाथ के पद

आवै संगै जाइ अकेला। ताथै गोरख रांम रमेला ॥ टेक ॥ काया हंस संगि वै आवा। जाता जोगी किन्हूँ न पावा ॥ जीवत जग मैं मूवां मसाणं। प्राण पुरिस कत कीया पयाणं ॥ जांमण मरणां बहुरि बियोगी। ताथै गोरख भैला जोगी ॥

इस जग में आत्मा शरीर के साथ आती है, किन्तु यहाँ से जाते समय अकेली जाती है। इसलिए गोरख राम में रमा है। हंस रूपी आत्मा शरीर के साथ तो आती है, परन्तु जाते समय यह आत्मा (जोगी) किसी को नहीं मिलती। जीवित काल में वह जग में दिखाई देती है, मरने पर शरीर श्मशान में पहुँच जाता है, परन्तु प्राण पुरुष कहाँ चला जाता है, कुछ पता नहीं।जन्म लेना, फिर मरना और अलग हो जाना (इन स्थितियों को देखकर) गोरख योगी बन गया।

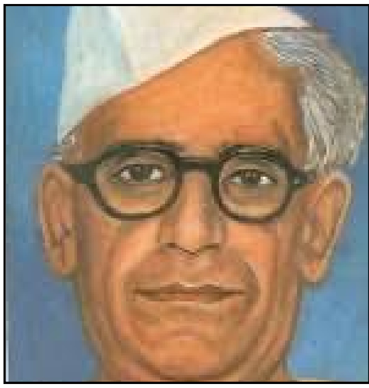

बालकृष्ण शर्मा नवीन

एक परिचय

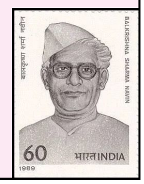

बालकृष्ण शर्मा नवीन

बालकृष्ण शर्मा नवीन का परिचय
उपनाम : 'नवीन'

मूल नाम : बालकृष्ण शर्मा
जन्म :8 दिसंबर 1897 | शाजापुर, मध्य प्रदेश

निधन :29 अप्रैल 1960 | कानपुर, उत्तर प्रदेश
द्विवेदी युग के समादृत कवि, पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी पंडित बालकृष्ण शर्मा नवीन का जन्म 8 दिसम्बर 1897 को ग्वालियर राज्य के भयाना नामक ग्राम में हुआ था। 1917 में स्कूली शिक्षा पूरी कर गणेशशंकर विद्यार्थी के कानपुर आश्रम में रहकर कॉलेज की पढ़ाई कर रहे थे तभी 1920 में गांधीजी के सत्याग्रह आंदोलन के आह्वान पर पढ़ाई छोड़ देश की व्यावहारिक राजनीति में शामिल हो गए और फिर जीवनपर्यंत राजनीति से उनका नाता बना रहा। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान निर्मात्री परिषद के सदस्य, संसद सदस्य और राजभाषा आयोग के सदस्य के रूप में उन्होंने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

उनका लेखन-कर्म स्कूली दिनों से ही शुरू हो गया था लेकिन 1917 में गणेशशंकर विद्यार्थी के संपर्क में आने के बाद व्यवस्थित लेखन की शुरुआत हुई। इस दौरान उनकी संबद्धता गणेशशंकर विद्यार्थी द्वारा प्रकाशित ‘प्रताप’ पत्र से हो गई थी। वर्ष 1921-23 के दौरान वह ‘प्रभा’ पत्रिका के संपादक रहे और गणेशशंकर विद्यार्थी की मृत्यु के पश्चात 1931 में ‘प्रताप’ के प्रधान संपादक का उत्तरदायित्व सँभाला। इन पत्र-पत्रिकाओं में अभिव्यक्त उनकी संपादकीय टिप्पणियों को उनकी निर्भीकता और मुखरता के लिए सराहा गया। वह एक ओजस्वी वक्ता भी थे। राजनीति और पत्रकारिता करते हुए भी मूल रूप से वह एक कवि थे जिन्होंने द्विवेदी युग के समापन और राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के उभार की संक्रमण बेला में अपना साहित्यिक योगदान दिया। उनकी कविताओं में उमंगपूर्ण और प्रेमिल अभिव्यक्तियों के साथ ही उद्दाम प्रणय-आवेग और प्रखर राष्ट्रीयता भावना के दर्शन होते हैं।

‘उर्मिला’ खंड-काव्य में उन्होंने चिर-उपेक्षिता उर्मिला के प्रति कवि-न्याय का प्रदर्शन किया है। संवेदना और शिल्प की समग्रता की दृष्टि से 'रश्मिरेखा' उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। वह कविता में हालावाद के प्रवर्तक भी कहे जाते हैं। उनके द्वारा रचित ‘कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ’ सदृश कविताओं की लोकप्रियता आज भी बनी हुई है। एक गद्य-लेखक के रूप में उनकी प्रतिष्ठा उनकी ओजपूर्ण और निर्भीक संपादकीय टिप्पणियों के लिए रही।

‘कुंकुम’, ‘रश्मिरेखा’, ‘अपलक’ और ‘क्वासि’ उनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं. ‘उर्मिला’ उनका प्रशंसित प्रबंध-काव्य है. उन्होंने ‘विनोबा स्तवन’ शीर्षक प्रशस्ति एवं उद्बोधन की भी रचना की। साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान के लिए भारत सरकार ने वर्ष 1960 में उन्हें ‘पद्म भूषण’ से सम्मानित किया।

29 अप्रैल, 1960 को कानपुर में उनका निधन हो गया।

आधुनिक काल

सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के बाद आधुनिक चेतनायुक्त मानस निर्मित हुआ, जिसे पुनर्जागरण ने और प्रबल किया। गद्य की मुकम्मल शुरुआत हुई, कविता की विषयवस्तु में आमूलचूल परिवर्तन हुए और कविता अभिव्यक्ति के वर्जित कोनों तक पहुँची। इस काल में ही—जो अब जारी है—प्रयोगों और विमर्शों के बीच साहित्य का संवाद संसार के अग्रगामी विचारों और परिवर्तनों से हुआ।

रीतिकाल

काव्यशास्त्र की विशेष परिपाटी का अनुसरण करने के कारण 1643 ई. से 1843 ई. के समय को साहित्य का रीतिकाल कहा गया है। घोर शृंगार काव्य के अतिरिक्त इस दौर में भावुक प्रेम, वीरता और नीतिपरक कविताएँ लिखी गईं।

भक्तिकाल

लगभग 1318 ई. से 1643 ई. के दरमियान भक्ति-साहित्य की दो धाराएँ विकसित हुईं—एक सगुण धारा, जिसमें रामभक्ति और कृष्णभक्ति की सरस गाथाएँ हैं; दूसरी निर्गुण धारा, जिसमें ज्ञानमार्गी संतों और प्रेममार्गी सूफ़ी-संतों की महान परंपरा है। भारत के सांस्कृतिक और साहित्यिक इतिहास में भक्तिकाल को 'लोकजागरण' का स्वर्णयुग माना गया है।

आदिकाल

हिंदी साहित्य के इतिहास में अनुमानतः 993 ई. से 1293 ई. के बीच का समय आदिकाल माना गया है। इस युग के कई नामकरण हुए, लेकिन अपने समय की व्यापक पृष्ठभूमि का बोध 'आदिकाल' शीर्षक से पूर्णतः संप्रेषित होने के कारण हिंदी साहित्य के आरंभिक दौर के लगभग तीन सौ वर्षों का स्वीकृत नाम आदिकाल है।

1. PRIYANKA - 12-12-2001
2. KIRAN - 24-12-2001
3. Parveen - 27-12-2002

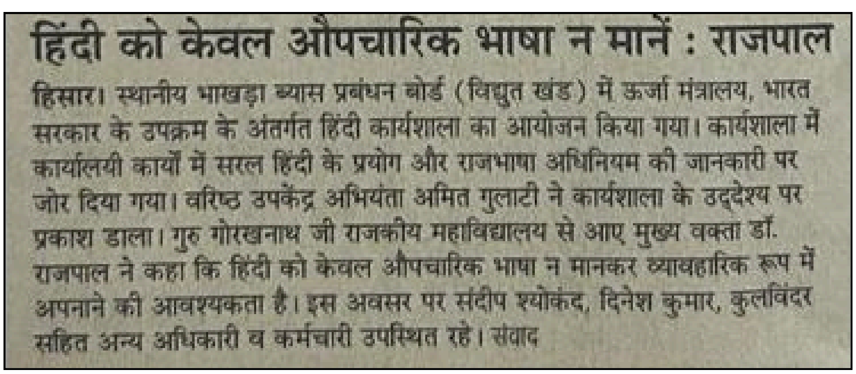

हिंदी को केवल औपचारिक भाषा न मानें : राजपाल

हिसार। स्थानीय भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (विद्युत खंड) में ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के उपक्रम के अंतर्गत हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कार्यालयी कार्यों में सरल हिंदी के प्रयोग और राजभाषा अधिनियम की जानकारी पर जोर दिया गया। वरिष्ठ उपकेंद्र अभियंता अमित गुलाटी ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय से आए मुख्य वक्ता डॉ. राजपाल ने कहा कि हिंदी को केवल औपचारिक भाषा न मानकर व्यावहारिक रूप में अपनाने की आवश्यकता है। इस अवसर पर संदीप श्योकंद, दिनेश कुमार, कुलविंदर सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे। संवाद

Basic English and Advanced English Words

1. Artificial Intelligence (AI)
Artificial Intelligence helps machines think like humans.
2. Machine Learning
Machine learning allows computers to learn from data.
3. Algorithm
An algorithm is a set of steps to solve a problem.
4. Data
AI uses data to make decisions.
5. Robot
A robot can do work automatically.
6. Automation
Automation makes work faster with less human effort.
7. Chatbot
A chatbot answers questions like a human.
8. Neural Network
A neural network works like the human brain.
9. Voice Assistant
A voice assistant follows spoken commands.
10. Facial Recognition
Facial recognition identifies a person by their face.
11. Deep Learning
Deep learning helps computers understand complex patterns.
12. Big Data
Big data provides large information for AI systems.
13. Computer Vision
Computer vision helps machines see and understand images.
14. Natural Language Processing (NLP)
NLP allows computers to understand human language.
15. Smart System
A smart system makes decisions automatically using AI.

साहित्य – मंथन

दिसम्बर माह में जन्मे हिंदी साहित्यकार

कवि ठाकुर प्रसाद सिंह
(जन्म: 01 दिसंबर 1924; मृत्यु: अक्तूबर 1994)
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

सुचर्चित नवगीत कवि ठाकुर प्रसाद सिंह का जन्म 01 दिसंबर 1924 को वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में प्रदेश) में हुआ था। हिंदी और प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व में उच्च शिक्षा की प्राप्ति के बाद वह अध्यापन और पत्रकारिता के पेशे से संलग्न हुए। उन्होनें ग्राम्या (साप्ताहिक) और उत्तर प्रदेश (मासिक) पत्र-पत्रिका के संपादन में योगदान दिया। वे कालांतर में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के निदेशक भी रहे।

उन्होंने गीतों व कविताओं के अलावा कहानी, निबंध और उपन्यास विधा में भी योगदान किया है। महामानव' (प्रबंध-काव्य), 'वंशी और मादल' (गीत-संग्रह) और हारी हुई लड़ाई लड़ते हुए उनकी चर्चित काव्य-कृतियाँ हैं। चौथी पीढ़ी उनकी कहानियों का संकलन है और कुब्जा सुंदरी' और 'सात घरों का गाँव' उनके उपन्यास हैं। 'पुराने घर नए लोग' और 'प्रदक्षिणा' उनके निबंध-संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'पहिए, कठपुतली, 'गहरे सागर के मोती, हिंदी निबंध और निबंधकार आदि कृतियों की रचना की है। 'मोर पंख' में उनकी प्रतिनिधि गद्य रचनाओं का संकलन हुआ है। उनके नवगीतों में फूल से सजाओ, मैं वंशी, पर्वत पर आग, ये अधूरे गीत, मेरे घर के पीछे, मादर ना बजा, कब से तुम गा रहे, पाँच जोड़ बांसुरी, पात झरे, इत्यादि है।

पात झरे
पात झरे, फिर-फिर होंगे हरे
साखू की डाल पर उदासे मन उन्मत का क्या होगा पात- पात पर अंकित चुंबन चुंबन का क्या होगा मन-मन पर डाल दिये बंधन बंधन का क्या होगा पात झरे, गलियों- गलियों बिखरे
कोयलें उदास मगर फिर- फिर वे गाएँगी नए-नए चिन्हों से राहें भर जाएंगी खुलने दो कलियों की ठिठुरी ये मुट्ठियाँ माथे पर नई-नई सुबहें मुसकाएंगी
गगन- नयन फिर- फिर होंगे भरे पात झरे, फिर-फिर होंगे हरे

यशपाल
(जन्म: 03 दिसम्बर 1903: मृत्यु: 24 जुलाई 2017)
फिरोजपुर छावनी, पंजाब

यशपाल जी का जन्म 03 दिसंबर 1903 को हुआ। उनके माता-पिता आर्यसमाजी थे। इसी कारण उस समय पंजाब के क्रांतिकारी नेता लाला लाजपतराय से उनका संपर्क हुआ तो यशपाल जी भी बड़े होकर स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े। इसी के कारण उनकी अन्य क्रांतिकारी नेताओं से भी घनिष्ठता हो गयी। उन्होने लाहौर के नेशनल कॉलेज से बीए किया तथा नाटककार उदयशंकर से उन्हें लेखन की प्रेरणा मिली। साथ ही यशपाल जी मार्क्सवादी विचारधारा से भी प्रेरित रहे हैं। उनकी रचनाओं में इसका प्रभाव देखने को मिलता है। वह एक यथार्थवादी रचनकर और प्रगतिशील विचारक रहे हैं और सामाजिक रूढ़ियों एवं पुरातनपंथी विचारों के घोर विरोधी रहे हैं। यशपाल भारतीयता के साथ- साथ पाश्चात्य विचारधारा से भी प्रभावित रहे हैं। साथ ही उनका समाज के नीचे दर्जे के लोग व मध्यमवर्गीय लोगों के प्रति उनकी पूर्ण सहानुभूति रही है, इसीलिए उनका समग्र लेखन आम इंसान से जुड़ा हुआ है। उन्होने विप्लव नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया है।

उनकी प्रमुख रचनाओं में उनकी आत्मकथा 'सिंहावलोकन, कहानी संग्रहः तर्क का तूफान, पिंजरे की उड़ान, तुमने क्यों कहा मैं सुंदर हूँ, चिंगारी, प्रमुख उपन्यासः दादा कामरेड, झूठा सच, दिव्या, पार्टी कामरेड, निबंध संग्रहः बात बात में, न्याय का संघर्ष, क्लब, यात्रा संस्मरणः राह बीती, दीवारों के दोनों और इत्यादि।

बालकृष्ण शर्मा नवीन
(जन्म: 8 दिसम्बर 1897; - मृत्यु 1960)
भ्याना, मध्यप्रदेश
बालकृष्ण शर्मा नवीन परंपरा और समकालीनता के कवि थे। नवीन जी द्विवेदी युग के कवि हैं। उनकी कविता में स्वच्छन्दतावादी धारा के प्रतिनिधि स्वर के साथ-साथ राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना, गांधी दर्शन और संवेदनाओं की झंकृतियाँ समान ऊर्जा और उठान के साथ सुनी जा सकती है। इनके महत्वपूर्ण काव्यग्रंथ हैं- कुमकुम, रश्मिरेखा, अपलक, उर्मिला तथा हम विषपायी जन्म के।
बालकृष्ण शर्मा एक अच्छे गद्यकार के साथ जागरूक पत्रकार भी थे। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1960 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया था।
उर्मिला काव्यग्रंथ की कुछ पंक्तियाँ नीचे उदधृत हैं:-
"देवि उर्मिले तेरी अकथित गाथा गाता हूँ मैं, किंवा तव चरिताम्बुधि भजन के हित आता हूँ मैं अति अगम्य बलवती लहर है ताह न पाता हूँ मैं हृदय शिला पर तव चरणों को देवि बिठाता हूँ मैं"

रामवृक्ष बेनीपुरी
(जन्म: 23 दिसंबर, 1899; मृत्युः सितंबर 1968)
मुजफ्फरपुर, बिहार
रामवृक्ष बेनीपुरी जी का जन्म 23 दिसंबर को मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुरी गाँव में हुआ। उसी के आधार पर इन्होने अपना नाम रामवृक्ष बेनीपुरी रखा। वे हिन्दी साहित्य के शुकलोत्तर युग के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। बेनीपुरी जी ने गद्य लेखक, शैलीकार, पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी, समाज-सेवी, हिन्दी प्रेमी के रूप में अपनी प्रतिभा की अमिट छाप छोडी है। उनकी भाषा-वाणी प्रभावशाली रही है। राष्ट्र निर्माण समाज संगठन और मानवता के जयगान को लक्ष्य मानकर बेनीपुरी जी ने ललित निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, नाटक, उपन्यास, कहानी, बाल साहित्य, रिपोर्टर्ज आदि विविध गद्य विधाओं में जो रचनायें प्रस्तुत की हैं वे आज की युवा पीढ़ी के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत है। वे एक सफल संपादक के रूप में भी याद किए जाते हैं और साथ ही राजनीतिक पुरुष और पक्के देशभक्त के रूप में भी। ये हिन्दी साहित्य के पत्रकार भी रहे और इन्होने कई समाचार पत्र भी निकाले। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सक्रिय सेनानी के कारण 1930 से 1942 तक का समय जेल में ही व्यतीत करना पड़ा, इसी बीच साहित्य-सर्जना से भी जुड़े रहें। उनकी प्रमुख रचनाओं में उपन्यास 'पतितों के देश में (कारावास काल के अनुभव के आधार पर), "आम्रपाली", रेखाचित्र "माटी की मूरतें (कारागार से मुक्ति की पावन पावन के साथ)। अन्य रचनाओं में "जय प्रकाश, नेत्र दान, सीता की माँ, विजेता, मील के पत्थर, गेंहुन और गुलाब इत्यादि। शेक्स्पीयर के गाँव में और नींव की ईंट इन लेखों में भी बेनीपुरी जी ने अपने देश प्रेम, साहित्य प्रेम, त्याग की महत्ता, साहित्यकारों के प्रति सम्मान भाव दर्शाया है।
बेनीपुरी जी के सम्मान में बिहार सरकार द्वारा अखिल भारतीय रामवृक्ष बेनीपुरी पुरस्कार दिया जाता है।

उषा प्रियंवदा
(जन्म: 24 दिसंबर 1930)
कानपुर, उत्तर प्रदेश
उषा प्रियंवदा का जन्म 24 दिसंबर 1930 को कानपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होने उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हासिल की। हमेशा से अँग्रेजी की अध्यता रहीं उषा जी की लेखनी से हिन्दी साहित्य कोश हमेशा समृद्ध होता रहा। इनकी गणना उन कथाकारों में होती है, जिन्होंने आधुनिक जीवन की ऊब, छटपटाहट और अकेलेपन की स्थिति को पहचाना और उसे व्यक्त किया। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में एक और आधुनिकता का प्रबल स्वर मिलता है तो दूसरी और उसमें विभिन्न प्रसंगों तथा समवेदनाओं के साथ हर वर्ग का पाठक तादामय का अनुभव करता है। उषा जी के कथा साहित्य में शहरी परिवारों के बड़े ही अनुभूति प्रवण चित्र है आ आधुनिक जीवन की उदासी, अकेलेपन, ऊब आदि का अंकन करने में उनहोनने अत्यंत गहरे यथार्थबोध का परिचय दिया है।
उषा जी को 2007 में केंद्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा पद्मभूषण डौ मोटूरी सत्यनारायन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।
उनकी प्रमुख कृतियों में कहानी संग्रह जिंदगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा, मेरी प्रिय कहानियाँ, उपन्यासः पचपन खंभे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा इत्यादि।

प्रियंका

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. "समग्र महाकाव्य के भीतर से पृथ्वीराज की त्रासदी के साथ एक सामाजिक- राजनीतिक त्रासदी भी उभरती है जो जितनी पृथ्वीराज की है उससे कहीं अधिक राष्ट्र की है" - पंक्तियाँ किसकी हैं? डॉ० बच्चन सिंह
2. संस्कृत में 'पृथ्वीराज विजय' नामक काव्य किसने लिखा ? - पृथ्वीराज की राजसभा के काश्मीरी कवि जयानक ने
3. 'ढोला-मारू रा दूहा' है- ११वीं शताब्दी में दोहों में रचित एक प्रेमकाव्य
4. 'सोरहियो दूहो भलो, भलि मरवण री बात। जोवन छाई धण भली, तारो छाई रात।।" - पंक्तियाँ किस ग्रंथ के संदर्भ में प्रसिद्ध हैं? -ढोला मारु रा दूहा।
5. १७वीं शताब्दी में किस कवि ने 'ढोला मारु रा दूहा' में कुछ चौपाईयों को जोड़ा? - कुशलराय वाचक
6. "सदा तैरैया ना बनफूलै, यारो सदा न सावन होय। स्वर्ग मड़ैया सब काहू को यारो सदा न जीवै कोय।।" - पंक्तियाँ किस ग्रंथ की हैं? परमाल रासो (आल्ह खंड)
7. 'राउलवेल' की रचना किसने किया ? - रोडा नामक कवि
8. 'राउलवेल' का रचनाकाल है? - १०वीं शताब्दी
9. गद्य-पद्य मिश्रित चम्पू काव्य की प्राचीनतम कृति हैं? राउलबेल (यह एक शिलांकित कृति है)
10. हिंदी में नख-शिख-वर्णन की श्रृंगार परंपरा की कृति से आरंभ होती है? - राउलवेल
11. 'राउलवेल' की भाषा है? लोकभाषा मिश्रित अपभ्रंश (राजस्थानी प्राधान्य)
12. खड़ी बोली के प्रथम कवि माने जाते हैं? खुसरो (१३वीं शताब्दी)
13. आचार्य शुक्ल के अनुसार खुसरो ने कब रचना आरंभ की? संवत १३४० के आस-पास (१२८३ ई०)

किरण रानोलिया

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
उधार	ऋण
उपयुक्त	ठीक
उपर्युक्त	ऊपर कहा हुआ
उर	हृदय
उपयोग	व्यवहार में लेना
उपभोग	भोगना
ऊरु	जाँघ
उदक	जल
उदक्	उत्तर दिशाम

कार्यालयी कार्यों में सरल हिंदी का उपयोग एवं राजभाषा अधिनियम की धारा *3 (3)* का विस्तृत विवरण देते हुए ।

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Legislature = विधान मंडल

Letter book = पत्र पुस्ती

Letter Exchange = विनिमय पत्र

Letter indemnity = क्षतिपूर्ति पत्र

Letter Intent = आशय पत्र

Liaison = संपर्क

Licence = अनुज्ञप्ति/लाइसेंस

Limited concern = सीमित दायिता/व्यवसाय

Liquidation = परिसमापन

Litigation = मुक़दमेबाजी

Lock out = तालाबंदी

Locus Standi = वैध स्थिति

Lodging = वासगृह

Log Book = कार्य पंजी

Loss in transit = मार्ग में हानि

Lower age limit = निम्न वय सीमा

Machine punching = बेधनी

Machine. Stapling = तार-सिलाई मशीन

Magazine = गोदाम/बारूद घर/ आयुध आगार

Maiden speech = प्रथम भाषण

Maintenance = अनुदान

Maladjustment = कुसमायोज़न

Malafide = कदाशय

Malice = विद्वेष

Manipulate = जोड़-तोड़ करना

Manual = शारीरिक/नियम पुस्तिका

Margin = हाशिया/उपांत/गुंजाइश

Master Plan = बृहत् योजना

Memo = ज्ञापन

Memorandum = ज्ञापन

क्रिसमस की खुशी बनाम गुरु गोबिंद सिंह के बलिदान

भारत का दिसंबर माह सदैव ही एक विशेष प्रकार के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विविधता का दर्पण रहा है। एक ओर जहाँ दुनिया भर के साथ तालमेल बिठाते हुए क्रिसमस का उत्सव पूरे देश में आनंद और उल्लास का वातावरण बनाता है, वहीं दूसरी ओर दिसंबर माह का अंतिम सप्ताह सिख इतिहास के एक अत्यंत दुःखद और वीरतापूर्ण अध्याय को अपने में समेटे हुए है। यह वह सप्ताह है जब गुरु गोबिंद सिंह जी के पूरे परिवार ने धर्म और नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए अतुलनीय बलिदान दिया। इन दोनों ही स्मृतियों के बीच एक सामंजस्य स्थापित करना आज के समय की एक जटिल आवश्यकता बन गई है।

क्रिसमस का त्योहार, जो 25 दिसंबर को ईसा मसीह के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है, वैश्विक स्तर पर प्रेम, शांति और भाईचारे का संदेश फैलाता है। भारत एक बहुलवादी समाज होने के नाते इस उत्सव को पूरे उत्साह के साथ अपनाता है। यह देश की सहिष्णुता और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है। स्कूल, बाजार और घर सजते हैं, लोग एक-दूसरे को बधाई देते हैं और आनंद मनाते हैं। यह उत्सवधर्मिता भारतीय समाज के उदार चरित्र को दर्शाती है।

वहीं इसी माह का 21 दिसंबर से 27 दिसंबर तक का समय सिख इतिहास के एक शोकपूर्ण एवं वीरतापूर्ण कालखंड की याद दिलाता है। 21 दिसंबर, 1704 को गुरु गोबिंद सिंह जी को परिवार सहित आनंदपुर साहिब का किला छोड़ना पड़ा। इसके बाद के दिनों में घटी घटनाएँ मानवीय साहस और बलिदान की अद्वितीय मिसाल हैं। 22 दिसंबर को चमकौर के युद्ध में उनके दो बड़े साहिबजादे, 17 वर्षीय अजीत सिंह और 14 वर्षीय जुझार सिंह, अपने कुछ साथियों के साथ असंख्य मुगल सैनिकों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इसी बीच, गुरु जी की माता गुजरी जी और दोनों छोटे साहिबजादे, 8 वर्षीय जोरावर सिंह और 6 वर्षीय फतेह सिंह, एक विश्वासघाती के द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। 24 दिसंबर को उन्हें सरहिंद के ठंडे बुर्ज में कैद किया गया। 25 और 26 दिसंबर को उन छोटे बच्चों को नवाब वजीर खान के सामने पेश किया गया और उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए प्रलोभन दिए गए। 27 दिसंबर को, दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ अपने धर्म पर अटल रहते हुए, उन दोनों नन्हें सिंहों को जिंदा दीवार में चुनवा कर शहीद कर दिया गया। इस दुःखद समाचार को सुनकर माता गुजरी जी ने भी प्राण त्याग दिए।

यह समग्र घटनाक्रम न केवल सिख धर्म के लिए, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए बलिदान, साहस और अटूट निष्ठा का एक अद्वितीय उदाहरण है। एक पिता का अपने पुत्रों को धर्म और सिद्धांतों की रक्षा के लिए बलिदान के पथ पर अग्रसर करना, नन्हें बच्चों का इतनी क्रूर यातना के बावजूद अपने विश्वास से डिगना स्वीकार न करना, और एक दादी का अपने पोतों के बलिदान के बाद संसार से विदा होना—यह सब इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इस सप्ताह को 'शहीदी सप्ताह' के रूप में स्मरण किया जाता था, जहाँ लोग उन बलिदानों का सम्मान करते हुए सादगी और श्रद्धा के साथ रहते थे।

आज की तारीख में, क्रिसमस के वैश्विक उत्सव के प्रभाव में इस ऐतिहासिक सप्ताह की स्मृति कुछ धूमिल सी होती प्रतीत होती है। यह एक स्वाभाविक प्रश्न उठाता है कि क्या हम एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के धनी होने के बावजूद अपने इतिहास के कुछ पहलुओं से दूर होते जा रहे हैं। जिस तरह से गुरु गोबिंद सिंह जी और उनके परिवार ने अत्याचार के समक्ष न झुकने की मिसाल कायम की, वह केवल एक धर्म विशेष तक सीमित नहीं है, बल्कि सभी भारतवासियों के लिए गर्व और प्रेरणा का विषय है। यह बलिदान राष्ट्रीय एकता, धार्मिक स्वतंत्रता और नैतिक साहस के मूल्यों की रक्षा के लिए दिया गया था।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम क्रिसमस के उत्सव और शहीदी सप्ताह के स्मरण के बीच एक संतुलन बनाएँ। एक ओर जहाँ हम वैश्विक भाईचारे और प्रेम के त्योहार को मनाते हैं, वहीं दूसरी ओर हमें अपने राष्ट्रीय इतिहास के उन वीर पुत्रों और उनके बलिदानों को भी याद रखना चाहिए। यह स्मरण केवल शोक व्यक्त करने के लिए नहीं, बल्कि उन मूल्यों को आत्मसात करने के लिए है जिनके लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। शिक्षा प्रणाली और सामाजिक संवाद में इस ऐतिहासिक घटनाक्रम को उचित स्थान देना आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी विरासत से परिचित हो सकें।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम क्रिसमस के उत्सव और शहीदी सप्ताह के स्मरण के बीच एक संतुलन बनाएँ। एक ओर जहाँ हम वैश्विक भाईचारे और प्रेम के त्योहार को मनाते हैं, वहीं दूसरी ओर हमें अपने राष्ट्रीय इतिहास के उन वीर पुत्रों और उनके बलिदानों को भी याद रखना चाहिए। यह स्मरण केवल शोक व्यक्त करने के लिए नहीं, बल्कि उन मूल्यों को आत्मसात करने के लिए है जिनके लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। शिक्षा प्रणाली और सामाजिक संवाद में इस ऐतिहासिक घटनाक्रम को उचित स्थान देना आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी विरासत से परिचित हो सकें।

सार रूप में, दिसंबर का यह समय हमें एक साथ दो महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाता है—एक, विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सम्मान और उल्लास का भाव, और दूसरा, अपने इतिहास और बलिदानियों के प्रति कृतज्ञता और स्मरण का दायित्व। इन दोनों को समन्वित करके ही हम एक सही मायने में जागरूक और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी और उनके परिवार का बलिदान यह याद दिलाता है कि स्वतंत्रता और सिद्धांतों की रक्षा का मूल्य कितना महत्वपूर्ण है, जबकि क्रिसमस का उत्सव यह स्मरण कराता है कि प्रेम और सद्भाव का संदेश सार्वभौमिक है। दोनों ही भावनाएँ मानवीय मूल्यों के दो पहलू हैं, जिनका सम्मान और स्मरण एक साथ किया जाना चाहिए।

पुस्तक समीक्षा

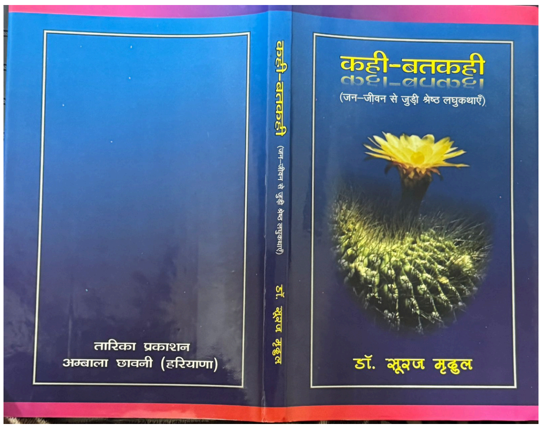

लेखक: डॉ० सूरज मृदुल
पुस्तक: “कही-बतकही"
मूल्य: ₹100.00
पृष्ठ: 80
विधा- लघुकथा
तारिका प्रकाशन अम्बाला छावनी (हरियाणा)

डॉ. सूरज मृदुल का लघुकथा संग्रह 'कही-बतकही' हिंदी साहित्य में लघुकथा विधा की परिपक्वता और सामर्थ्य का एक जीवंत दस्तावेज़ है। यह संग्रह न केवल लघु आकार में गहरी अभिव्यक्ति का उदाहरण है, बल्कि समकालीन जीवन की जटिलताओं, विडंबनाओं और सूक्ष्म भावनात्मक धरातलों को बखूबी उकेरता है। संग्रह की प्रमुख शक्ति इसकी विषयवस्तु की सार्वभौमिकता में निहित है। 'व्यूह' जैसी लघुकथा में आधुनिक जीवन की जटिल और उलझी हुई मानसिकता का चित्रण है, तो 'श्रद्धा-भक्ति' में आस्था के समकालीन स्वरूप को टटोला गया है। 'शर्म', 'खौफ' और 'विश्वासघात' जैसी कथाएँ मानवीय संवेदनाओं के उस सूक्ष्म संसार को छूती हैं, जहाँ शब्द कम पड़ जाते हैं, परंतु लेखक की कलम उन्हें मूर्त रूप देने में सफल रही है। भाषा और शैली के स्तर पर यह संग्रह उल्लेखनीय है। डॉ. मृदुल ने सहज, प्रवाहमयी परंतु गहन अर्थ-छवियों वाली भाषा का प्रयोग किया है। लघुकथा की सीमाओं में रहते हुए भी प्रत्येक रचना एक पूर्ण कथात्मक अनुभव प्रदान करती हैं। संवादों की मितव्ययिता और प्रतीकों का सार्थक प्रयोग इन कथाओं को विशिष्ट बनाता है। 'आभास' और 'दुर्घटना' जैसी कथाओं में तो शब्दों का चयन इतना सटीक है कि पाठक अनुभव के स्तर पर स्वयं को कथानक का हिस्सा पाता है। सामाजिक प्रासंगिकता के दृष्टिकोण से 'कही-बतकही' एक दर्पण का कार्य करता है। ये लघुकथाएँ न केवल व्यक्तिगत अंतर्द्वंद्वों, बल्कि सामाजिक विसंगतियों, राजनीतिक कुटिलताओं और सांस्कृतिक विडंबनाओं को भी बेधती हैं। 'पर्दे के पीछे' और 'गुलाबी सपने' जैसी रचनाएँ आधुनिक जीवन की बाहरी चमक-दमक और आंतरिक खोखलेपन के बीच के अंतराल को स्पष्ट करती हैं। इस संग्रह की एक विशेषता पाठकीय संवादात्मकता भी है। लेखक ने इन रचनाओं को इस प्रकार सृजित किया है कि पाठक स्वयं को निष्क्रिय पाठक न रहकर सक्रिय भागीदार अनुभव करता है। अधिकांश कथाओं का अंत खुला छोड़ दिया गया है, जो पाठक को चिंतन और निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करता है। 'रिश्ता' और 'आत्मघात' जैसी कथाएँ तो पठनोपरांत लंबे समय तक मानस पटल पर उमड़ती-घुमड़ती रहती हैं। हिंदी लघुकथा परंपरा में स्थान के संदर्भ में यह संग्रह एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यह लघुकथा के विकासक्रम में उस चरण का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ यह विधा मात्र नैतिक शिक्षा या व्यंग्य का माध्यम न रहकर जीवन के बहुआयामी यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाली गंभीर साहित्यिक विधा बन गई है। डॉ. मृदुल ने इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए लघुकथा को नया विस्तार और गरिमा प्रदान की है। कुछ कथाएँ, जैसे 'शब्द-दंश' और 'छटपटाहट', भाषाई प्रयोगों और मनोवैज्ञानिक गहराई के कारण विशेष रूप से प्रभावित करती हैं। संग्रह का नाम 'कही-बतकही' भी सार्थक प्रतीत होता है, क्योंकि ये रचनाएँ न केवल कही गई हैं, बल्कि पाठक से बतियाती भी प्रतीत होती हैं।
निष्कर्षत:, 'कही-बतकही' एक ऐसा संग्रह है जो लघुकथा की सीमाओं को लांघकर व्यापक मानवीय अनुभव का दस्तावेज़ बन गया है। यह संग्रह न केवल साहित्य प्रेमियों, बल्कि उन सभी पाठकों के लिए पठनीय है जो जीवन की जटिलताओं को सूक्ष्मता से समझने की इच्छा रखते हैं। डॉ. सूरज मृदुल ने इस कृति के माध्यम से लघुकथा विधा को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं और हिंदी साहित्य को एक स्मरणीय कृति दी है।

समीक्षक
डॉ राजपाल
हिंदी विभाग
गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार